International Journal of Applied Research 2017; 3(7): 274-277

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(7): 274-277
www.allresearchjournal.com
Received: 28-05-2017
Accepted: 29-06-2017

डॉ.उत्तम पटेल
एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला.वलसाड, गुजरात

Correspondence
डॉ.उत्तम पटेल
एसोसियेट प्रोफेसर एवम् अध्यक्ष, हिंदी विभाग, श्री वनराज आर्ट्स एण्ड कॉमर्स कॉलेज, धरमपुर, जिला.वलसाड, गुजरात

कुंकणा बोली के लोक-कथात्मक गीत

डॉ.उत्तम पटेल

सारांश
दक्षिणी गुजरात आदिवासी बहुल प्रदेश है। इसकी तीन मुख्य आदिवासी जातियाँ हैं-धोडिया, कुंकणा और वारली। इनकी बोलियों को इनके ही नाम से क्रमशः धोडिया, कुंकणा और वारली बोली कहते हैं। इन तीनों बोलियों में लोक-साहित्य की दृष्टि से कुंकणा बोली बहुत ही समृद्ध है जिसमें लोकगीत, लोककथा, पहेलियाँ आदि की भरमार है। कुंकणा जाति में कुछ लोकगीत ऐसे भी हैं जो किसी न किसी लोक-कथा पर आधारित हैं। जो कुंकणा जनजाति की मान्यताओं, रीतिरिवाजों, कुल संबंधी मान्यताओं को बारीकी से उभारते हैं। इनके कथात्मक गीत लौकिकता और अलौकिकता से युक्त हैं।

कुट शब्द– कुंकणा, प्रेम, विरह, मायादेवी।

प्रस्तावना
कुंकणा जाति दक्षिणी गुजरात की एक महत्त्वपूर्ण जनजाति है। ये लोग महाराष्ट्र के कोंकण प्रांत से गुजरात में आये थे, ऐसा माना जाता है। कोंकण प्रदेश से आये होने के कारण इन्हें कुंकणा तथा इनकी बोली को कुंकणा बोली कहते हैं।

एक अन्य मत के अनुसार- जुना जमानामां जे लोक दरेन मेरला रहत तेहला दरेन मेर रहनार इसां आखाय जहतां। दरेन मेर रहनेल लोकां माटे फारसीमां कोंकणा आखायता। ते वरहुन आपणे लोकोनां नांव कुंकणा पडनेल आहा। अर्थात् प्राचीन समय में समुद्र किनारे रहनेवाले लोगों को कोंकणा कहा जाता था। फारसी भाषा में समुद्र के किनारे रहनेवालों को कोंकणा कहते हैं। उसी पर से अपनी जाति का नाम कुंकणा पडा हुआ है।

इस जनजाति के लोग धरमपुर, वांसदा, आहवा-डांग, कपराडा (गुजरात के दक्षिणी विस्तार) तथा महाराष्ट्र के नासिक, धूलिया तथा थाणे जिलों में रहते हैं। प्राचीन काल में नर्मदा के दक्षिणी तट से लेकर कोंकण प्रांत के क्षेत्र को अपरांत प्रांत कहा जाता था और इस प्रांत की उत्तरी सीमा दक्षिणी गुजरात के नवसारी क्षेत्र तक फैली हुइ थी। इसलिए इस जनजाति को इस क्षेत्र की मूल निवासी (आदिवासी) मानी जाती है।

दक्षिणी गुजरात के कपराडा तालुका में रहनेवाले आदिवासियों का काम-धंधे, मजदूरी, लेन-देन आदि के संबंध में धरमपुर से अधिक जुडाव पेंठ-नासिक से है। और वैसे भी कपराडा-सुथारपाडा क्षेत्र भौगोलिक दृष्टि से नासिक से जुडे हुए हैं। इस दृष्टि से भी गुजरात के इस सीमांत प्रदेश के लोंगो का संबंध गुजराती भाषा से अधिक मराठी भाषा से है। यही कारण है कि इस बोली में मराठी भाषा के शब्दों की अधिकता है।

कुंकणा बोली लोक-साहित्य की दृष्टि से एक महत्त्वपूर्ण बोली है। इसमें लोक-कथाओं, लोक-गीतों की मौखिक परंपरा आज भी जीवित है। लोक-कथात्मक गीत इस जाति के लोक साहित्य की मुख्य विशेषता है जिसमें लोक-कथाएँ लोक-गीतों के माध्यम से बहती हैं। डॉ.श्यामसुंदर दुबे के मतानुसार- कथात्मक या प्रदीर्घ लोकगीत फुरसत की रचनाएँ हैं जिनका सृजन अघाइयों और चौपालों में हुआ है। साहस और शौर्य, चमत्कार और रहस्य, वेदना और करुणा की कथाएँ चौपालों में कउड़े पर बैठा ग्रामीण शताब्दियों से सुनता आ रहा है। इन्हीं कथाओं को और अधिक सम्प्रेष्य एवम् प्रभावशाली बनाने के लिए इनको पद्यात्मकता प्रदान कर दी गई। [1]

प्रस्तुत हैं कुंकणा बोली के दो कथात्मक गीत-

(१)

उमाजी नाईक काळुजी देशमुख भले सुद्दीदार करतो
दिल्ली चा दरबार हो...जी...
येंही हुकुम दिला गावलोकाल माज गोळा करुन
माजघरावरी हो...जी...
सोळा सांठ लोक पडल वनामदी मग माज गोळा करुन
माज घरावरी टांकलाय माजघरा मदी हो...जी...
उमाजी नाईक काळुजी देशमुख मजले खनावरी,
मजले कनावरी लावलेय दारू ची तार हो...जी।
केंब चे डोंगरावरी नीगला तीळा येवडा आबुट,
पाणी पडला मुसळधार हो...जी...
वाजडी चे र बोम्बे बोम्ब मारतो पोळा पोळा
लोकाहों नदी आलेय कोरडी भरुन हो...जी...
उमाजी नाईक काळुजी देशमुख मजले खनावरी,
लावतो दारू ची तार हो...जी...
खबरदार लोकाहो पोळसा नोको कोनी होत
भामटा आहे मासी मारायेल हो...जी...
वाजडी चे र बोम्बेनी नदी दिलेय छोडुना
उमाजी नाईक काळुजी देशमुख मजले खनावरुन
पाडले हानुन माजघरा मदी हो...जी...
सोळा सांठ र लोक डुबेन झाल माजघरा मदी हो...जी...
बारा वरसा र घरतनपण घालेला तो
श्री डुबुन गेलेय माजघर मदी हो...जी...
ती श्री बुडुन गेलेय माजघरा मदी अन
टाकलेय वाळुवर काहडुना हो...जी...
घरतने गेलाय पाहाये अन तो
मुडदा पडलाय वाळुवरी हो...जी...
अर पडलाय वाळुवरी अन तेनी
मग दिलाय मुडदेल भोग हो...जी...
उमाजी नाईक काळुजी देशमुख भले सुद्दीदार करतो
दिल्ली चा दरबार हो...जी...

(उमाजी नायक काळुजी देशमुख (का राजदरबार में बडा मान था और वे) दिल्ली के जैसे कानून बनाते थे। उसने गाँववालों को हुक्म दिया कि (तुम्हें) माजघर में माज इकट्ठा करना होगा। सोलह सौ साठ लोग वन में माज इकट्ठा करने रहने लगे। बाद में (उन्होंने) माजघर में माज रखा। उमाजी नायक काळुजी देशमुख चट्टान पर बैठ कर शराब पी रहा था। केम्ब नामक पहाड से तिल जितना माज निकला और वर्षा हुई मूशलाधार। वाजडी के बोम्बेने पुकार मचायी कि भागो, भागो, सूखी नदी (में बाढ़) आ रही है। उमाजी नायक काळुजी देशमुख चट्टान पर बैठ कर शराब पी रहा था। (उसने लोगों से कहा) खबरदार,कोई भी भागेगा नहीं। यह तो कोई लुच्चा लगता है जो मछली मारने आया हो। वाजडी के बोम्बे ने नदी से बाहर निकल चट्टान पर बैठे उमाजी नायक काळुजी देशमुख को नदी में लुढका दिया। सोलह सौ साठ लोग माजघर में डूब गये। (उसमें) बारह साल तक घरजँवाई रहे एक पुरूष की पत्नी माजघर में डूब कर मर गई। उसे रेत पर निकाला गया। घरजँवाई उस मुर्दे को देखने गया जो रेत पर पडा था। बाद में उस मुर्दे को घरजँवाई ने भोग दिया।(अर्थात् वह भी उसके विरह में मर गया)।

यह एक लोक-कथा पर आधारित गीत है। कहा जाता है कि ऐसी घटना धरमपुर के पास से बहती पार नदी के पास के माजघर में हुई थी।

(२)

वाढ वाढ चंदन झाड
माल जाव दे वरले देश.
सात भाउ, एक बयीन,
हारी वाढेल, हारी खेलेल.
बईन असी डोकी धव,
एके केस नींछी पड.
पाने मांत माछुक मरील,
बाहेर टांकन जीव मरील,
पूडी वाली पानेन टांक.
धाकला भाऊ पूडी ईंच,
केस हेरी ईचार कर.
कनी बायको डोकी धव.
माना लगना लीजो माय.
आयकी माय ईचार कर,
जुवा हेर केस माय,

नींही पड़ मेल जीसां,
धाकली बईन डोकी उकल,
केस येतो तीने माय,
बईन भाऊ लगना कर,
ईत काही मेल पड।

(सात भाईयों की एक बहन थी। सभी साथमें बड़े हुए थे, खेले भी थे। एक दिन बहन (जो सातों भाईयों में सबसे छोटी थी) बाल धोने नदी में गई।(बाल धोते समय) एक बाल निकल पड़ा। (उसने सोचा) अगर बाल पानी में डालूंगी तो (उसे निगल जाने से) मछली मर जायेगी। (और यदि) बाहर फेंक दूँगी तो जीव-जंतु (बाल खाने से) मर जायेंगे। (अतः उसने) पुडी बनाकर बाल को नदी में डाल दिया।

(नदी के ऊपरी बहाव में बहन बाल धो रही थी जबकि नदी के नीचे के बहाव में छोटा भाई नहा रहा था।) उसने नदी में बहती हुइ पुडी को देखा तो उसमें एक बाल था।

उसने सोचा, वह लड़की बड़ी बुद्धिमती होगी। (जिसने जीव-जंतुओं के बारे में सोचा।) यह बाल किस लड़की का होगा। और वह निश्चय करता है कि शादी करूँगा तो उसीसे (और) उसने यह बात अपनी मां से कही।

उसकी मां सोच में पड़ गई। मुहल्ले भरकी लड़कियों को, जूं देखने के बहाने वह कंधी कर देती और अपने बेटे ने जो बाल दिया था, उसका नाप भी ले लेती। फिर भी उस बाल वाली लड़की का पता नहीं चला।

एक दिन वह अपनी बेटी को कंधी कर रही थी। (तब उसने बाल का नाप ले कर देखा) तो बाल उसीके नाप का निकला। मां ने यह बात बेटे से कही कि वह बाल तो तेरी बहन का है। किन्तु बेटा नहीं माना। परिणाम भाई-बहन की शादी तय हुई। शादी के दिन जैसै-जैसे निकट आते हैं, बहन को चिंता होती है। तब वह एक चंदन के वृक्ष को रोपते हुए उससे कहती है- हे चंदन, तू जल्दी से बड़ा हो जा और मुझे स्वर्ग में ले जा। (क्योंकि अब तो ईश्वर ही मेरी सहायता कर सकता है अर्थात् अगर मैं मर जाऊँगी तब ही यह समस्या हल होगी।)

१.प्रस्तुत गीत एक लोक-कथा पर आधारित है

२.आदिवासियों में विवाह के रिश्ते सगोत्र में नहीं होते। क्योंकि सगोत्र संबंधों को रक्त से जुडा, एक ही परिवार का माना जाता है। जिनके बीच शादी के रिश्ते नहीं होते।यदि गलती से रिश्ते जुड भी जाते हैं तो पता चलते ही उन्हें तोड दिया जाता है। और इस प्रकार जब एक ही परिवार में शादी का रिश्ता नहीं हो सकता तो फिर भाई-बहन की शादी का विचार तो सपने में भी नहीं आ सकता।

३.पुरूष तो मर्यादा तोड़ सकता है किन्तु स्त्री कैसे तोडेगी। और जहाँ पुरूष के रूप में सामने भाई ही हो वहाँ तो स्त्री की जिम्मेवारी और भी बढ़ जाती है। प्रकृति का काम तो पुरूष को मर्यादा में रखना है। अतः बहन को अपने ही भाई से शादी करना तो किसी भी परिस्थिति में स्वीकार्य नहीं होगा। चाहे उसके लिए उसे मृत्यु का वरण क्यों न करना पड़े।

४. नारी पुरूष से महान है-इस उक्ति को यह गीत चरितार्थ करता है।

प्रस्तुत गीत एक लोक-कथा पर आधारित है। इससे मिलती-जुलती एक अन्य लोक-कथा प्रसिद्ध है। गुजरात राज्य के डांग जिले के भेंसकातरी नामक गांव के पास मायदेवी का प्राचीन मंदिर है। इससे जुड़ी कथा इस प्रकार है -

मायादेवी बहुत ही सुंदर थी। महाकाली माता का पुत्र पानदेव भी युवा था।

एक दिन मायादेवी पूर्णा नदी के किनारे स्नान के बाद बाल बनाते समय सिर से एक लट जितने बाल टूट गये। उसे इधर-उधर फेंकने से जीव-जंतु मर जायेंगे यह सोच कर उसने आक के पत्ते की एक पुडी बनाकर उसमें बाल रखकर जुई की बेल से बांध झरने में बहा दी। नदी के नीचे के बहाव की ओर पानदेव, नारणदेव, बरमदेव आदि देवता अकाल से त्रस्त हो, बारिश देव (इन्द्र) को रिझा रहे थे कि बारिश होने लगी और पूर्णा नदी में बाढ़ आयी। बाढ़ के कारण मायादेवी के बालों वाली पुडी बहने लगी।

पानदेव ने उसे देखा तो बाहर निकाल पुडी क़ो खोला, तो उसमें सुंदर लंबे बाल थे। जिसे देखकर वे खुश हो गये और मन ही मन निश्चय किया कि शादी करूंगा तो इसी बाल वाली देवी से।

पानदेव ने घर जाकर यह बात अपनी माता महाकाली से की। महाकाली इस देवी की खोज में कंघी और तेल लेकर निकल पड़ी। जो भी देवी उसे मिलती उसे कंघी कर देती और साथ में बाल का नाप ले कर देखती। किन्तु वह बाल वाली देवी का पता लगा नहीं। कुछ दिनों बाद उसे मायादेवी (कनसरी या कंसरी देवी, जिसे यहां के आदिवासी अन्न की देवी मानकर पूजते हैं) मिली। पानदेव की माता ने उसके बालों में तेल डालकर कंघी करते हुए बाल नाप कर देखा तो वह उसी के नाप का था। पानदेवी और मायदेवी की शादी तय हुई। किन्तु अन्य देवी-देवताओं के विरोध के परिणामस्वरूप मायादेवी ने शादी करने से मना कर दिया। मायादेवी को मनाने के लिए देवों ने भी प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप मायादेवी घर से सूप लेकर जल दुर्ग नामक स्थान में उसकी आड़ में छिप गई।

जिसे खोजने के लिए हाथी-घोड़े, नागदेवता, शंकर भगवान, गणपति आदि गये।

जल दुर्ग गांव में मायदेवी के मंदिर के पास आज भी इन देवताओं की मूर्तियां देखने को मिलती हैं जो मायादेवी को खोज रहे हैं।

महाशिवरात्रि के दिन यहां मेला लगता है।

ऐसा ही एक गीत अवधी में भी है जिसमें एक भाई अपनी ही बहन से शादी करना चाहता है। बहन पानी भरने जाती है। भाई अपनी बहन के सिर पर घड़ा रखने में मदद करता है, इसी बीच बहन का आँचल सरक जाता है। तो उसकी नज़र बहन के उन्नत उरोजों पर पड़ती है। घर आकर वह अपनी भाभी के सामने बहन से शादी करने की इच्छा व्यक्त करता है। जैसे-

सात बिरन रूना बहिनी ना।
रूना चली हइं सागर पनिया हो ना..
गगरी जउ बोरिन धरीं जउ कररवा हो ना।
जोहन लागीं गगरी उठवइया हो ना..
घोड़वा चढ़ल आवइ राउर भइया हो ना।
बहिनी हम तोर गगरी उठउबइ हो ना..
गगरी उठावत वनकइ छुटिगै अंचरवा हो ना।
भइया कइ परिगा नजरिया हो ना..
अब गोड़े-मूड़े तानेन चदरिया हो ना।
बइठी जगावइं वनकइ माया बढ़इतिनि हो ना..
उठा बेटा करा दतुनिया हो ना।
माया सिर मोरा बहुतइ धमाकै हो ना..
बैठी जगावइं वनकै भउजी बढ़इतिनि हो ना।
उठा देवरा सींझा जेवनरवा हो ना..
सीझा जेवना न जेंवउं मोरी भउजी हो ना।
बहिनी संग फिरबइ भंवरिया हो ना..
जरइ देवरा तोरा अकिलि गिअनवा हो ना।
बहिनी संग फिरबेआ भंवरिया हो ना..[2]

निष्कर्षः इस प्रकार उपर्युक्त दोनों गीतों के आधार पर से हम कह सकते हैं कि कुंकणा बोली के कथात्मक गीतों में जनजीवन में प्रसिद्ध लोक-कथाएँ बहुत ही लयात्मक रूप से अभिव्यक्त हुई हैं। इन कथात्मक गीतो द्वारा धरमपुर पहाड़ी प्रदेश के आदिवासियों की मान्यता, उनकी परंपराएँ, उनके कुल विषयक मान्यताएँ बहुत ही सुंदर रूप से व्यक्त हुई हैं। और सबसे महत्वपूर्ण तथ्य तो यह है कि ये कथात्मक गीतो में भाव साम्यता भी गजब की है।

संदर्भ सूची

1. दुबे, श्यामसुंदर, लोकः परंपरा, पहचान एवम् प्रवाह, पृ. 11, राधाकृष्ण प्रकाशन प्रा.लि. दिल्ली. 2004.
2. उपाध्याय, कृष्णदेव, अवधी लोकगीत-भाग-1, पृ.२३७-२३८, हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग. 1990.